आवासीय बाल प्रतियोगिता निकेतन श्रीरामपुर टोला बिहटा,पटना

Class - सभी प्रतियोगिता परीक्षा के लिए S.K VERMA के मार्गदर्शन में

हिंदी भाषा एवं व्याकरण का सामान्य परिचय

भाषा:- भाषा भाष् धातु से बना है जिसका अर्थ "विचार प्रकट करना" होता है।

धातु:-क्रिया के मूल रूप (संस्कृत) को धातु कहते है। जैसे:- अस्, खाद् , गच्छ

विचार:- मनुष्य के मन की वह अध्वन्यात्मक इकाई जिसमें आवाज नहीं होती है,उसे विचार कहते हैं।

भाषा की परिभाषा :- भाषा वह साधन या माध्यम है जिसके द्वारा एक या एक से अधिक व्यक्तियों के द्वारा अपने विचारों को एक या एक से अधिक व्यक्तियों तक आदान-प्रदान करते हैं,उसे भाषा कहते हैं।

*** भाषा को सीखने के लिए तीन प्रकार की योग्यता मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से है।**

(१) जिज्ञासा (२) अनुकरण (३) अभ्यास

भाषा का विकास क्रम:- सुनना -> बोलना -> पढ़ना ->लिखना

*** मारिया मान्टेसरी के अनुसार भाषा का विकास क्रम :-सुनना -> बोलना -> लिखना -> पढ़ना**

*** भाषा के मुख्यतः दो प्रकार हैं** -(1.) मौखिक भाषा (2.) लिखित भाषा

*** भाषा तीन प्रकार के होती है-**

(1) मौखिक भाषा (2.) लिखित भाषा (3.) संकेतिक भाषा

(1) मौखिक भाषा :-वैसा भाषा जिन्हें हम बोलकर व्यक्त करते हैं तथा सामने वाला सुनकर उसे ग्रहण करता है उसे मौखिक भाषा कहते हैं। **उदाहरण: टेलीफ़ोन, दूरदर्शन, भाषण, वार्तालाप, नाटक, रेडियो आदि।**

(2.) लिखित भाषा :- वैसा भाषा है जिन्हें हम लिखकर व्यक्त करते हैं तथा सामने वाला उसे पढ़कर ग्रहण करता है उसे लिखित भाषा करते हैं।**उदाहरण:- पत्र, समाचार पत्र, कहानी,लिखित सूचना आदि।**

CONCEPT WITH SK VERMA

(3.) संकेतिक भाषा:- वैसा भाषा जिन्हें हमने तो लिखकर और नहीं बोलकर प्रकट करते हैं बल्कि संकेत या इशारा के माध्यम से करते हैं उसे सांकेतिक भाषा कहते हैं। **उदाहरण:- हाथ के आकार, विन्यास और संचालन, बांहों या शरीर , चेहरे के हाव-भावों ,हॉर्न बजाना,आदि।**

*** सबसे कठिन भाषा संकेतिक भाषा है तथा सबसे सरल भाषा मौखिक भाषा है।**

*** लिखित भाषा सरल या कठिन दोनों प्रकार का है।**

हिंदी के इतिहास

* भारत की प्राचीनतम भाषा या मूल भाषा संस्कृत है, जिसकी शुरुआत ऋग्वैदिक काल (1500 ईसवी पूर्व) में हुआ।

*** संस्कृत भाषा के दो रूप हैं** - (1) वैदिक या साहित्यिक रूप (2) लौकिक रूप

* बौद्ध साहित्य में 500 ईसवी पूर्व के समय **पालि भाषा** की शुरुआत हुई। और बौद्ध धर्म का पवित्र ग्रंथ **त्रिपिटक ग्रन्थ** इसी भाषा में लिखी गई है।

* जैन साहित्य में 0 ईस्वी पूर्व **प्राकृत भाषा** की शुरुआत हुई। और जैन धर्म का पवित्र ग्रंथ **आगम्य ग्रंथ** इसी भाषा में लिखी गई है।

* 500 ईसवी के समय अपभ्रंश भाषा की शुरुआत हुई, और इसी भाषा का एक रूप **शौरसेनी अपभ्रंश(1050ईसवी) भाषा** है, जिससे हिंदी भाषा की निर्माण हुई।

*** हिंदी फारसी शब्द** है जिन्हें ईरान के लोगों ने बोला था। क्योंकि हड़प्पा सभ्यता में ईरानियों ने **"स" का उच्चारण "ह"** से करते थे।और सिंधु नदी के आसपास रहने वाले लोगों को **हिंदू कहते थे और उसके भाषा सिंधी को हिंदी** कहा करते थे।

हिंदी का भूगोल

* चीन की भाषा **मंदारिन** विश्व के सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है

* 2nd स्थान पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा **अंग्रेजी** है, 3rd स्थान पर **हिंदी** और 4th स्थान पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा दक्षिण अमेरिका की **स्पेनीज** है।

* **हिंदी भाषा मध्य भारत में बोली** जाती है जैसे:- राजस्थान झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा , छत्तीसगढ़ ,दिल्ली ,अंडमान निकोबार आदि।

हिंदी का संवैधानिक या राजनीतिक दृष्टिकोण

CONCEPT WITH SK VERMA

* भारतीय संविधान के **अनुसूची- 8 भाग- 17 अनुच्छेद- 343 से 351 तक में 22 भाषा** का वर्णन तथा **देवनागरी लिपि** किया गया है।

*** 14 सितंबर 1949** को संविधान सभा के बैठक में हिंदी भाषा को राजभाषा घोषित किया गया इसीलिए **14 सितंबर को हिंदी दिवस** मनाया जाता है।

सामान्य जानकारी

बोली:- यह सीमित क्षेत्र में होता है अर्थात यह छोटे क्षेत्र में होता है।

भाषा :-जब बोली विस्तृत हो जाती है तो वह भाषा बन जाती है।

मातृभाषा:- यह माता के मुख से सीखी जाती है और यह परिवार ,समाज से प्राप्त किया जाता है।

राजभाषा:- यह संविधान में उल्लेखित भाषा होता है, तथा इससे देश के शासन प्रशासन का कार्य किया जाता है।

राष्ट्रभाषा:- यह किसी राष्ट्र के द्वारा सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा होती है।

व्याकरण

व्याकरण :- यह वि+ आ + करण से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ "भली-भांति समझना"

व्याकरण की परिभाषा :-व्याकरण वह शास्त्र या ग्रंथ है जिसमें भाषा का **शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन, तथा शुद्ध प्रयोग** का ज्ञान प्रदान करता है, उसे व्याकरण कहते हैं।

*** हिंदी व्याकरण या भाषा का मुख्यतः तीन अंग है।** (1.) वर्ण विचार (2.) शब्द विचार (3.) वाक्य विचार

(1.) वर्ण विचार

वह व्याकरणिक बिंदु जिसमें वर्णों का **शुद्ध लेखन , शुद्ध उच्चारण, तथा शुद्ध प्रयोगों** का अध्ययन करते हैं, उसे वर्ण विचार कहते हैं।

* वर्ण ध्वनि से बनता है, तथा भाषा की सबसे छोटी **मौखिक इकाई ध्वनि** कहलाता है।

* भाषा की सबसे **छोटी मौखिक इकाई के लिखित रूप को वर्ण** कहते हैं, अर्थात भाषा की सबसे **छोटी लिखित इकाई वर्ण** कहलाता है।

* भाषा की सबसे छोटी इकाई/अंग **वर्ण** कहलाता है।

CONCEPT WITH SK VERMA

* अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई **शब्द** कहलाता है।

* भाव या भावार्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई **वाक्य** कहलाता है।

वर्ण के प्रकार:-

* वर्ण दो प्रकार के होता है- (1.) स्वर वर्ण (2.) व्यंजन वर्ण

(1.) स्वर वर्ण:-जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है अर्थात वह स्वतंत्र होती है उसे स्वर वर्ण कहते है। जैसे:- अ ,आ इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ आदि।

* हिंदी में स्वर वर्ण की संख्या **11** होती है लेकिन मूल भाषा के स्वर **13**(,) होती है।

(2.) व्यंजन वर्ण :-जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर वर्ण की सहायता ली जाती है उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। उनकी संख्या **33** होती है।

अक्षर :- यह ध्वनि का ही रूप है जो एक सांस में उच्चारित हो जाती है अर्थात जिसे उच्चारित करने हेतु कोई स्वरघात या बलाघात नहीं होती है उसे अक्षर कहते हैं।

* सभी वर्ण को **अक्षर** कह सकते हैं लेकिन सभी अक्षर को **वर्ण** नहीं कह सकते हैं।

स्वर वर्णों के प्रकार:-

1. मात्रा/ उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर वर्णों को 3 भागों में बाटा जाता है।

(क) ह्रस्व स्वर/ लघु स्वर/ छोटा स्वर/ एकमात्रिक स्वर/ मूल स्वर

(ख) दीर्घ स्वर/ गुरु स्वर /बड़ा स्वर/ द्विमात्रिक स्वर/ संधि स्वर

(ग) प्लूत स्वर

(क) ह्रस्व स्वर - जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता हैं उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये चार हैं- अ, इ, उ, ऋ। इनका संकेत । होता है।

(ख) दीर्घ स्वर - जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर के उदाहरण है। तथा इनकी संख्या 7 है। ए, ऐ, ओ, औ को संयुक्त स्वर भी कहते है।इनका संकेत ऽ होता है।

CONCEPT WITH SK VERMA

(ग) प्लुत स्वर - जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है अर्थात ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगे ,उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। जैसे:- नन्हकुआ रे$$$$$.... ओ३म आदि। इनकी संख्या 8(अ, दीर्घ स्वर) होती है।

* इनका प्रयोग **दूर से बुलाने में या संगीत क्षेत्र में** किया जाता है।

2. ओठो की स्थिती के आधार पर स्वरों को **2 भागों** में बांटा गया है।

(क) आवृतमुखी / वृताकार स्वर

(ख) वृतमुखी /अवृताकार स्वर

(क) आवृतमुखी : जिन स्वरों के उच्चारण में ओंठ वृतमुखी या गोलाकार नहीं होते हैं आवृतमुखी स्वर कहलाते हैं | उदहारण : अ, आ, इ, ई, ए, ऐ आदि

(ख) वृतमुखी : जिन स्वरों के उच्चारण में ओंठ वृतमुखी या गोलाकार होते हैं वृतमुखी स्वर कहलाते हैं | उदहारण : उ, ऊ, ओ, औ, ऑ आदि

* **"ऑ"** को आगत स्वर/ विदेशी स्वर/ मेहमान स्वर/ गृहित स्वर कहते है।

3. जीभ की क्रियाशीलता के आधार पर स्वरों को तीन भागों में बांटा गया है।

(क) अग्र स्वर (ख) मध्य स्वर (ग) पश्च स्वर

(क) अग्र स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग कार्य करता है, उसे अग्र स्वर कहते है| उदहारण : इ, ई, ए, ऐ

(ख) मध्य स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग काम करता है मध्य स्वर कहलाता है | उदहारण : अ

(ग) पश्च स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पश्च भाग काम करता है पश्च स्वर कहलाता है | उदहारण : आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ

4. तालु की स्थिति/मुख द्वार के खुलने के आधार पर स्वरों को **चार भागों** में बांटा जाता है।

(क) विवृत स्वर (ख)अर्ध-विवृत स्वर (ग) अर्ध-संवृत स्वर (घ) संवृत स्वर

विवृत स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार पूरा खुलता है विवृत स्वर कहलाते है। उदहारण : आ

CONCEPT WITH SK VERMA

अर्ध-विवृत स्वर: जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा खुलता है अर्ध-विवृत स्वर कहलाते है । **उदहारण** : अ, ऐ, औ, ऑ

अर्ध-संवृत स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार आधा बंद रहता है। अर्ध-संवृत स्वर कहलाते है। **उदहारण** : ए, ओ

संवृत स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख द्वार लगभग बंद रहता है संवृत स्वर कहलाते है । **उदहारण :** इ, ई, उ, ऊ

5. **अनुनासिकता/हवा के नाक और मुँह से निकलने के आधार पर** स्वरों को **दो भागों** में बांटा जाता है।

निरनुनासिक या मौखिक स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में हवा केवल मुँह से निकलती है निरनुनासिक या मौखिक स्वर कहलाते हैं। **उदहारण** : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ए, ऐ

अनुनासिक स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में हवा मुँह के साथ-साथ नाक से भी निकलती है, अनुनासिक स्वर कहलाते है| उदहारण : अं, आँ, इ, ई , उ, उं, एँ, ऐ

6. **जाति के आधार पर** स्वरों को **दो भागों** में बांटा जाता है।

(क) सजातीय स्वर (ख) विजातीय स्वर

(क) सजातीय स्वर:- समान स्वर समूह को सजातीय स्वर कहते हैं । जैसे - अ-आ, इ-ई, उ-ऊ आदि।

(ख) विजातीय स्वर :- असमान स्वर समूह को विजातीय स्वर कहते हैं। जैसे - अ-ए, अ-इ, इ-ए, अ-ऊ आदि।

2) व्यंजन :- जिन वर्णों को बोलने के लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है उन्हें व्यंजन कहते है। जैसे- क, ख, ग, च, छ, त, थ, द, भ, म इत्यादि।

व्यंजन वह ध्वनि है, जिसके उच्चारण में भीतर से आती हुई वायु मुख में कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी रूप में, बाधित होती है।

व्यंजनों के वर्गीकरण -

1.अध्ययन हेतु व्यंजनों को तीन भागों में बांटा गया है-

(1)स्पर्श व्यंजन (2)अन्तःस्थ व्यंजन (3)उष्म व्यंजन

CONCEPT WITH SK VERMA

(1)स्पर्श व्यंजन :- स्पर्श का अर्थ होता है -छूना। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के किसी भाग जैसे- कण्ठ, तालु, मूर्धा, दाँत, अथवा होठ का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते है।

* इन्हें हम **'वर्गीय व्यंजन'** भी कहते है; क्योंकि ये उच्चारण-स्थान की अलग-अलग एकता लिए हुए वर्गों में विभक्त हैं। जैसे -

(1)कवर्ग- क ख ग घ ङ ये **कण्ठ** का स्पर्श करते है।

(2)चवर्ग- च छ ज झ ञ ये **तालु** का स्पर्श करते है।

(3)टवर्ग- ट ठ ड ढ ण (ड़, ढ़) ये **मूर्धा** का स्पर्श करते है।

(4)तवर्ग- त थ द ध न ये **दाँतो** का स्पर्श करते है।

(5) पवर्ग- प फ ब भ म ये **होठों** का स्पर्श करते है।

*** इनकी संख्या 25 होती है।**

(2)अन्तःस्थ व्यंजन :- 'अन्तः' का अर्थ होता है- 'भीतर'। उच्चारण के समय जो व्यंजन मुँह के भीतर ही रहे उन्हें अन्तःस्थ व्यंजन कहते है।

* ये व्यंजन चार होते है- य, र, ल, व। इनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओठों के परस्पर सटाने से होता है, किन्तु कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं होता। अतः ये य, व अन्तःस्थ व्यंजन को 'अर्द्धस्वर' कहते हैं।

(3)उष्म व्यंजन :- उष्म का अर्थ होता है- गर्म। जिन वर्णो के उच्चारण के समय हवा मुँह के विभिन्न भागों से टकराये और साँस में गर्मी पैदा कर दे, उन्हें उष्म व्यंजन कहते है।

* उष्म व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न उष्म वायु से होता हैं। इनकी संख्या भी 4 होती है- श, ष, स, ह।

अनुस्वार :- यह स्वर के बाद आने वाला व्यंजन है। इसकी ध्वनि नाक से निकलती है। हिंदी भाषा में बिंदु अनुस्वार (ं) का प्रयोग विभिन्न जगहों पर होता है। जैसे -अनुस्वार (ं) का प्रयोग पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म् - ये पंचमाक्षर कहलाते हैं) के स्थान पर किया जाता है।

*** अनुस्वार बिंदु केवल 11 स्वर वर्ण पर ही लगाया जाता है।**

पंचमाक्षर :- प्रत्येक वर्ग का पंचम अक्षर पंचमाक्षर होता है। जैसे - ङ, ञ,ण, न, म ।

* पंचमाक्षर बिंदु वर्ण के बाद नीचे लगाया जाता है तथा इनकी संख्या 1 होती है। जैसे - ङ

CONCEPT WITH SK VERMA

*** ताड़नजात चिन्ह या फेंका हुआ चिन्ह या उत्क्षिप्त चिन्ह -** यह किसी वर्ण के नीचे लगाया जाता है, तथा यह दो वर्ण पर लगाया जाता है। जैसे – ड़, ढ़

ताड़नजात व्यंजन या फेंका हुआ व्यंजन या उत्क्षिप्त व्यंजन:-जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ के अगले भाग को थोड़ा ऊपर उठाकर झटके से नीचे फेंकते हैं, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। **जैसे -ड़, ढ़**

- **इन्हें स्वर रहित नहीं किया जा सकता है और नहीं इससे कभी नए शब्द का आरंभ किया जा सकता है।**

नुक्ता :-हिंदी भाषा में अरबी और फ़ारसी भाषाओं से आए हुए कुछ शब्दों को देवनागरी में लिखने के लिए कुछ वर्णों के नीचे एक बिंदुनुमा चिह्न ('़') का उपयोग किया जाता है उसे ही नुक्ता कहते हैं। **(जैसे क़, ख़, ग़, ज़, फ़ आदि)।** इनकी संख्या 5 होती है।

संयुक्त व्यंजन :-दो व्यंजनों के योग से बने हुए व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। हिंदी में निम्नलिखित चार व्यंजन (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) ऐसे हैं, जो दो-दो व्यंजनों के योग से बने हैं, किंतु एकल वर्ण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

क् और ष के योग से बना हुआ- क्ष (क्+ष) = क्ष

त् और र के योग से बना हुआ- त्र (त्+र) = त्र

ज् और ञ के योग से बना हुआ- ज्ञ (ज्+ञ) = ज्ञ

श् और र के योग से बना हुआ- श्र (श्+र) = श्र

अयोगवाह:- अं और अः को अयोगवाह कहते है,और इसका प्रयोग व्यंजन वर्ण के साथ नहीं होता है केवल स्वर वर्ण के साथ होता है।और इनकी सदैव दो मात्रा मानी जाती है।

*** ऑ ख़, ज़, फ़** को विदेशी वर्ण कहते है।

2. कम्पन के आधार पर व्यंजन वर्ण निम्नलिखित दो प्रकार के होते है –

(क) घोष वर्ण (ख) अघोष वर्ण

(क) घोष वर्ण :- घोष वर्णों का उच्चारण करने पर नाद या गूँज अधिक होती है। घोष वर्णों के अंतर्गत निम्नलिखित कुल 31 वर्ण आते हैं–

• प्रत्येक वर्ग का 3, 4, 5 वाँ वर्ण

• य, र, ल, व, ह

CONCEPT WITH SK VERMA

• सभी ग्यारह स्वर

Trick-345रू.घुस लेके सभी सर जी य,र,ल,व, पढ़वा हथीन।

(ख) अघोष वर्ण –अघोष वर्णों का उच्चारण करने पर नाद या गूँज कम होती है। घोष वर्णों के अंतर्गत निम्नलिखित कुल 13 वर्ण आते हैं –

• प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा वर्ण

• श ष स

3. प्राण वायु/श्वास वायु के आधार पर व्यंजन वर्ण निम्नलिखित दो प्रकार के होते है –

(क) अल्पप्राण (ख) महाप्राण

(क) अल्पप्राण :-अल्पप्राण वर्ण वे वर्ण होते हैं जिनके उच्चारण के समय श्वास वायु कम मात्रा में बाहर निकलती है। अल्पप्राण के अंतर्गत कुल वर्णों की संख्या 30 है। अल्पप्राण के अंतर्गत निम्नलिखित वर्ण आते हैं –

• पाँचों वर्गों के विषम वर्ण (1, 3, 5)

• य, र, ल, व

* कामता प्रसाद गुरु के अनुसार सभी स्वर वर्ण (11) अल्पप्राण होते है।

(ख) महाप्राण:-महाप्राण वर्ण वे वर्ण होते हैं जिनके उच्चारण के समय श्वास वायु अधिक मात्रा में बाहर निकलती है। महाप्राण के अंतर्गत कुल वर्णों की संख्या 14 है। महाप्राण के अंतर्गत निम्नलिखित वर्ण आते हैं –

• पाँचों वर्गों के सम वर्ण (2, 4)

• श, ष, स, ह

UNIQUE TRICK- जिसमें "h" रहेगा जैसे- ख(kh),घ(gh), छ(chh),....bh (भ) ,श(sh),ष(sh),ह (h) केवल स को जोड़कर और च को छोड़कर।

4. उच्चारण के आधार पर व्यंजन वर्ण निम्नलिखित आठ प्रकार के होते हैं –

(अ) स्पर्शी व्यंजन :-हिंदी वर्णमाला में स्पर्शी व्यंजनों की कुल संख्या 16 होती है जो कि निम्नलिखित हैं –

• क, ख, ग, घ • त, थ, द, ध • ट, ठ, ड, ढ • प, फ, ब, भ

CONCEPT WITH SK VERMA

(ब) संघर्षी व्यंजन:-हिंदी वर्णमाला में संघर्षी व्यंजनों की कुल संख्या 4 होती है जो कि निम्नलिखित हैं – श, ष, स, ह

(स) स्पर्श-संघर्षी व्यंजन:-हिंदी वर्णमाला में स्पर्श-संघर्षी व्यंजनों की कुल संख्या 4 होती है जो कि निम्नलिखित हैं –च, छ, ज, झ

(द) नासिक्य व्यंजन:-हिंदी वर्णमाला में नासिक्य व्यंजनों की कुल संख्या 5 होती है जो कि निम्नलिखित हैं – ड, ञ, ण, न, म

(य) उत्क्षिप्त, ताड़नजात या द्विगुणित व्यंजन:-हिंदी वर्णमाला में उत्क्षिप्त, ताड़नजात या द्विगुणित व्यंजनों की कुल संख्या 2 होती है जो कि निम्नलिखित हैं – ढ़ ,ड़

(र) पार्श्विक व्यंजन:-हिंदी वर्णमाला में पार्श्विक व्यंजनों की कुल संख्या 1 होती है जो कि निम्नलिखित हैं – ल

(ल) प्रकम्पित व्यंजन:-हिंदी वर्णमाला में उत्क्षिप्त, ताड़नजात या द्विगुणित व्यंजनों की कुल संख्या 1 होती है जो कि निम्नलिखित हैं- र

(व) संघर्षहीन व्यंजन, अर्द्ध स्वर या अर्द्ध व्यंजन:-हिंदी वर्णमाला में संघर्षहीन व्यंजन, अर्द्ध स्वर या अर्द्ध व्यंजनों की कुल संख्या 2 होती है जो कि निम्नलिखित हैं – य, व

* **कुल मूल वर्णों/साधारण वर्णों की संख्या =स्वर(11)+व्यंजन (33)=44 होती है।**
* **हिंदी में कुल वर्णों की संख्या= मूल वर्ण(44)+अयोगवा (2)+संयुक्ताक्षर (4) + ताड़नजात(2)=52 होती है।**
* **हिंदी में मानक वर्णों की संख्या=कुल वर्ण(52)+विदेशी वर्ण (4)=56 होती है।**

वर्णों का उच्चारण स्थान

किसी भी वर्ण का उच्चारण मुख द्वारा होता है | जीहवा (जीभ) मुख के जिस भाग को स्पर्श करती है , उन्हीं स्थानों को वर्णों का उच्चारण स्थान कहते है |

1. कण्ठ (कण्ठ्य वर्ण)– कवर्ग अ, आ, ह, और विसर्ग इत्यादि।

2. तालु (तालव्य वर्ण)-चवर्ग इ, ई, य, श इत्यादि।

CONCEPT WITH SK VERMA

3. मूर्धा (मूर्धन्य वर्ण)– ट वर्ग ऋ , र, और ष इत्यादि।

4. दन्त (दन्त वर्ण) - तवर्ग ,ऌ , ल और स इत्यादि।

5. ओष्ठ (ओष्ठ्य वर्ण)–पवर्ग उ, ऊ, (ॅ) अर्द्धविसर्ग

6. नासिका (नासिक्य वर्ण)– अं या प्रत्येक वर्ग का पंचम वर्ण

7. कण्ठतालु (कण्ठतालव्य वर्ण)– ए, ऐ (अ + इ)

8. कण्ठोष्ठ (कण्ठोष्ठ् वर्ण)– ओ, औ (अ + उ)

9. दन्तोष्ठ (दन्तोष्ठ्य वर्ण)– व

ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ इन सभी को मात्रा कहते है।और इनकी संख्या 10 होती है। "अ" वर्ण की कोई मात्रा नहीं होती है ,यह एक संकेत के रूप में प्रयोग होता है, क्योंकि यह उदासीन स्वर है।

CONCEPT WITH SK VERMA

CONCEPT WITH SK VERMA